।। मेहेर सागर ।।

और सागर जो मेहेरका, सो सोभा अति लेत ।
लेहेरें आवे मेहेर सागर, खूबी सुख समेत ।१।
हुकम मेहेर के हाथमें, जोस मेहेर के अंग ।
इसक आवे मेहेर से , बेसक इलम तिन संग ।२।
पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत ।
हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसवत ।३।
मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम ।
जलुस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम ।४।
ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर ।
जाथें मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर ।५।
दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखे ऊपर का जहूर ।
जाए अन्दर मेहेर कछु नहीं, आखर होत हक से दूर ।६।
मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहिं ।
आखर लग तरफ धनीकी, कमी कछु ए आवत नाहिं ।७।
मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व ।
पिंड ब्रह्मांड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत ।८।
ए दुख रूपी इन जिमीमें, दुख न काहूं देखत ।
बात बडी है मेहेर की, जो दुखमें सुख लेवत ।९।
सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर ।
दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर ।१०।
इन दुख जिमी में बैठके, मेहेरें देखे दुख दूर ।
कायम सुख जो हक के, सो मेहेर करत हजूर ।११।
मैं देख्या दिल बिचार के, इसक हक का जित ।
इसक मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित ।१२।

अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक ।
मेहेर सब विध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक ।१३।
जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पहले मेहेरें बनावे वजूद ।
गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूकत माहें बूद ।१४।
मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चंवर सिर छत्र ।
सोहोबत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र ।१५।
बोली बोलावे मेहेर की, और मेहेरै का चलन ।
रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेहेरें मिलावा रूहन ।१६।
बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकम ।
रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिएं मेहेर रस इसक इलम ।१७।
जित मेहेर तित सब हैं, मेहेर अव्वल लग आखर ।
सोहोबत मेहेर देवहीं, कहूं मेहेर सिफत क्यों कर ।१८।
एह जो दरिया मेहेरका, बातून जाहेर देखत ।
सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत ।१९।
बीच नाबूद दुनीय के, आई मेहेर हक खिलवत ।
तिन से सब कायम हुए, मेहेरै की बरकत ।२०।
बरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोंचत ।
ए मेहेर हककी बातूनी, नजर माहें बसत ।२१।
ए मेहेर करत सब जाहेर, सबका मता तोलत ।
जो किन कानों ना सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत ।२२।
बरनन करूं क्यों मेहेरकी, जो बसत है हक के दिल ।
जाको दिलमें लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल ।२३।
बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत है माहें हक ।
जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक ।२४।
बात बडी है मेहेरकी, जित मेहेर तित सब ।
निमख न छोडें नजर से, इन ऊपर कहा कहूं अब ।२५।

जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर ।
मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर ।२६।
बात बडी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर ।
अंकुर सोई हक निसबती, माहें बसत तजल्ला नूर ।२७।
ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम ।
मेहेर रेहेत नूर बल लिएं, तहां हक इसक इलम ।२८।
मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम ।
मेहेर इसक हक अंग है, मेहेर इसक प्रेम काम ।२९।
काम बडे इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक ।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताय देत आप माफक ।३०।
मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमन ।
मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फिरस्तन ।३१।
मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान ।
कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान ।३२।
दै मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत ।
मेहेरें दई हिकमत, करी मेहेरें जाहेर हकीकत ।३३।
सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखरत ।
मेहेर समझे मोमन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत ।३४।
ए मेहेर मोमिनों पर, एही खासल खास उमत ।
दई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनों बरकत ।३५।
मेहेरें खेल देख्या मोमिनों मेहेरें आए तलें कदम ।
मेहेरें क्यामत करके, मेहेरें हंसके मिले खसम ।३६।
मेहेर की बातें तो कहूं, जो मेहेर को होवे पार ।
मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नाहीं सुमार ।३७।
जो मेहेर ठाडी रहे, तो मेहेर मापी जाए ।
मेहेर पलमें बढे कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए ।३८।

मेहेरें दिल अरस किया, दिल मोमिन मेहेर सागर ।
हक मेहेर ले बैठे दिलमें, देखो मोमिनों मेहेर कादर ।३५।
बात बडी है मेहेर की, हक के दिलका प्यार ।
सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार ।४०।
जो एक वचन कहूं मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए ।
अपार उमर अपार जुबांए, तो मेहेर को हिसाब न होए ।४१।
निपट सागर बडा आठमा, ए मेहेर को नीके जान ।
जो मेहेर होए तुझ ऊपर, तो मेहेर की होए पेहेचान ।४२।
सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब ।
ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कै कोट करूं किताब ।४३।
ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर ।
ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर ।४४।
महामत कहें ऐ मोमिनो, ए मेहेर बडा सागर ।
सो मेहेर हक कदमों तलें, पीओ अमीरस हक नजर ।४५।